प्रश्न:- वैज्ञानिक प्रबन्ध से आप क्या समझते हैं? इसके लाभ -हानि को समझायें?

उत्तर:- वैज्ञानिक प्रबन्ध दो शब्दों के योग से बना है। वैज्ञानिक+ प्रबन्ध, वैज्ञानिक से आशय विशिष्ट जानकारी या ज्ञान की अभिवृद्धि है अर्थात् अपनी विशिष्ट जानकारी द्वारा प्रबन्ध करना है। इसकी परिभाषाएँ इस प्रकार हैं:-

(1) श्री सेलडन के अनुसार: "वैज्ञानिक प्रबन्ध किसी उद्योग में उसके प्रबन्धकों के द्वारा निर्धारित योजना को इस प्रकार चलाता है जिससे उसके उद्देश्य की पूर्ति सुविधा के साथ की जा सके।"

(2) F.W. Taylor के अनुसार:- "वैज्ञानिक प्रबन्ध, आपके यह जानने की कला है कि आप लोगों से यथार्थ में क्या कराना चाहते हैं तथा यह देखना चाहते हैं कि वे उसको सुन्दर तथा सस्ते से सस्ते ढंग से करें।"

उपर्युक्त परिभाषाओं को देखने से पता चलता है कि वैज्ञानिक प्रबन्ध किसी विशेष उद्देश्य के लिए लागू किया जाता है। आजकल व्यापार इतने बड़े पैमाने पर और इतने फैले हुए होते हैं कि उनका प्रबन्ध एवं संचालन करना काफी कठिन काम है। इसलिए प्रबन्ध एवं संचालन में वैज्ञानिक प्रबन्ध के लागू हो जाने से यह काम काफी आसान हो जाता है और व्यापार में भी पदोन्नति तरक्की होती है। श्रमिकों को उनकी उचित मजदूरी मिलती है। पूंजीपतियों को अपने पूंजी विनियोग का अच्छा नतीजा निकलता है। इन्हीं कारणों से आजकल बड़े-बड़े उद्योगों में वैज्ञानिक प्रबंध लागू किये जाते है।

वैज्ञानिक प्रबन्ध लागू करने से आजकल में अनेक ढंग से समाज के हर वर्ग को लाभ पहुँचता है जो कि निम्नलिखित है:-

I. श्रमिक वर्ग:- उद्योग में वैज्ञानिक प्रबन्ध लागू करने से श्रमिक वर्ग को भी लाभ पहुँचता है:-

(i) मजदूरी में वृद्धि:- वैज्ञानिक प्रबन्ध द्वारा मजदूरों की कार्यकुशलता को बढ़ाने पर ध्यान दिया जाता है और मजदूरों की कार्यक्षमता बढ़ जाती है और मजदूर अधिक उत्पादन करने लगते हैं। जिससे उद्योग को लाभ बढ़ता है और जब उद्योग का लाभ बढ़ता है मजदूरों की मजदूरी को भी बढ़ा दिया जाता है।

(iii) काम का समय कम हो जाता है :- वैज्ञानिक प्रबन्ध द्वारा श्रमिकों को कम से कम समय में अधिक से अधिक काम करना पड़ता है। इसमें मजदूरों को एक निश्चित समय में निश्चित काम करना पड़ता है इसलिए उनका कार्य का समय भी कम हो जाता है।

(iii) सहायता प्राप्त होने का आश्वासन :- श्रमिकों को ये आश्वासन दिया जाता है कि अगर उन्हें किसी बात की कठिनाई होगी तो प्रबन्धकर्ता उनकी मदद करेंगे और श्रमिक इस बात पर गर्व भी करते हैं कि प्रबन्धकर्ता उनका विशेष ध्यान रखते हैं।

(iv) जीवन स्तर में उन्नति :- मजदूरों के जीवन स्तर में वैज्ञानिक प्रबन्ध द्वारा उन्नति होती है। कार्य कुशलता में वृद्धि हो जाने से वे अधिक पारिश्रमिक पाने लगते हैं और प्रबन्धकों का नजरिया भी उनके प्रति बदल जाता है। अधिक पारिश्रमिक मिलने से श्रमिक अपने अधिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने लगता है।

(v) निःशुल्क प्रशिक्षण :- इन्हें उद्योग से संबंधित जानकारी प्राप्त करने के लिए मुफ्त प्रशिक्षण दिया जाता है, वैज्ञानिक प्रबन्ध के अन्तर्गत श्रमिकों को प्रशिक्षण देना नियोक्ताओं का कर्तव्य हो जाता है।

(vi) कार्य में रुचि :- मजदूरों को जिस कार्य में रुचि होता है उसी कार्य में उन्हें लगाया जाता है जिससे वे पूर्ण कार्य मन लगाकर करते हैं और इस सम्बन्ध में उनकी जानकारी और बढ़ती है।

(vii) अनुकूल वातावरण :- वैज्ञानिक प्रबन्ध के अन्तर्गत श्रमिकों को कार्य करने अनुकूल वातावरण मिलता है। जिससे उनका ध्यान पूरी तरह से अपने काम में ही लगता है।

(II) उद्योग पतियों या निर्माताओं की दृष्टि से लाभ :- उद्योगपतियों के दृष्टिकोण से वैज्ञानिक प्रबन्ध के अनेक लाभ हैं :-

(i) वस्तु की किस्म में सुधार :- वैज्ञानिक प्रबन्ध द्वारा मंत्रीकरण तथा विभिन्न अनुसंधानों के द्वारा उत्पादित होने वाले वस्तु के किस्म में सुधार होता है। उत्पादन कार्य पूर्ण निरीक्षण में किया जाता है इसके द्वारा भी वस्तु के किस्म में सुधार होता है।

(ii) प्रति इकाई वस्तु की कम लागत :- उद्योगों में वैज्ञानिक प्रबन्ध लागू करने से वैसे तो खर्च काफी बढ़ जाता है, मजदूरी भी अधिक देनी पड़ती है पर श्रमिक की कार्यक्षमता इतनी बढ़ती है कि प्रति इकाई वस्तु का लागत काफी कम हो जाता है।

Scanned with

(iii) श्रम पूंजी के झगड़े का अन्त :- वैज्ञानिक प्रबन्ध द्वारा श्रम और पूंजी के झगड़े का अन्त हो जाता है क्योंकि वैज्ञानिक प्रबन्ध द्वारा संघर्ष तथा मनमुटाव पैदा करनेवाले हर कारणों को समाप्त कर दिया जाता है।

(iv) श्रम विभाजन का लाभ :- वैज्ञानिक प्रबन्ध द्वारा श्रमिकों को उनकी योग्यता के अनुसार कार्य सौंपा जाता है जिससे उद्योगपतियों श्रम विभाजन तथा विशिष्टिकरण का लाभ प्राप्त होता है।

(v) न्यूनतम श्रम परिव्यय :- वैज्ञानिक प्रबन्ध द्वारा नये-नये यंत्रों, उपकरणों तथा उच्च कोटि के सामग्री का प्रयोग किया जाता है। जिसके कारण वैसे श्रमिकों का व्यय बच जाता है जो इन सब कार्यों को खुद करते हैं क्योंकि इसके द्वारा कुछ कम जानकारी वाले कर्मचारी भी कार्य ले लेते हैं।

(vi) श्रमिकों द्वारा अधिकतम कार्य :- इसके द्वारा इस ढंग का कार्यान्वयन किया जाता है कि श्रमिक पहले से भी कम समय में अधिक कार्य दिया जाता है। इस प्रकार वैज्ञानिक प्रबन्ध द्वारा श्रमिकों से अधिकतम कार्य लेना सम्भव हो जाता है।

(vii) पूर्ण निरीक्षण सम्भव :- वैज्ञानिक प्रबन्ध द्वारा समूची कम्पनी पूर्ण निरीक्षण सम्भव हो जाता है। अतः किसी भी कार्य का निरीक्षण करने में किसी भी प्रकार की असुविधा नहीं होती है

(viii) मूल्यों में कमी :- इसके द्वारा कर्मचारियों की कार्यकुशलता को बढ़ाया जाता है जिसे प्रति इकाई लागत कम हो जाते हैं। प्रति इकाई लागत कम हो जाने से प्रति इकाई मूल्य भी कम हो जाता है। जिससे बाजार में इसकी माँग काफी बढ़ जाती है और अधिक बिक्री की पूर्ति के लिए अधिक उत्पादन करना पड़ता है। जिससे अधिक लाभ उद्योगपतियों को प्राप्त होता है।

वैज्ञानिक प्रबन्ध के दोष :- वैज्ञानिक प्रबन्ध के उपर्युक्त लाभ होने के साथ-साथ इसके अनेक दोष भी हैं जो निम्नलिखित हैं :-

I श्रमिकों द्वारा विरोध :- वैज्ञानिक प्रबन्ध का श्रमिकों द्वारा विरोध किया जाता है। इसके विरोध करने के निम्नलिखित कारण हैं :-

(i) अधिक परिश्रम :- जिस उद्योग में वैज्ञानिक प्रबन्ध लागू होता है उस उद्योग में श्रमिकों को काफी मेहनत करना पड़ता है। जिससे उनका स्वास्थ्य क्षीण हो जाता है और जब उनकी उम्र अधिक हो जाती है तो वे कोई काम करने लायक नहीं रहते और उनकी नौकरी

खत्म होने के पहले ही उसे निकाल दिया जाता है।

(ii) इसके द्वारा बड़ी मात्रा में बेरोजगारी फैल जाती है :- वैज्ञानिक प्रबन्ध में कुशल श्रमिकों को ही रखा जाता है जिसके जो श्रमिक कुछ कम कुशल होते हैं उनकी छंटनी कर दी जाती है। जिसके फलस्वरूप अकुशल श्रमिकों में बेरोजगारी फैल जाती है।

(iii) प्रेरणा का अन्त हो जाता है :- जिस उद्योग में वैज्ञानिक प्रबन्ध लागू होता है। उस उद्योग में श्रमिक एक मशीन की तरह कार्य करते हैं क्योंकि उन्हें एक निश्चित समय में निश्चित काम करना पड़ता है और ठीक वही काम करना पड़ता है जो कि उन्हें सौंपा जाता है, इस प्रकार उन्हें अपनी कुशलता तथा योग्यता दिखाने का दूसरा मौका नहीं मिल पाता है और उनकी प्रेरणा का अंत हो जाता है।

(iv) कार्य के प्रति रुचि का अभाव :- वैज्ञानिक प्रबन्ध में श्रमिकों को स्वतन्त्रता नहीं रहती है वे एक मशीन की तरह कार्य करते हैं और एक ही कार्य में लगे रहते हैं जिसमें उनके कार्य में कोई नवीनता नहीं दिखाई पड़ता है और कार्य के प्रति उनकी रुचि समाप्त हो जाती है। जिसका प्रतिकूल प्रभाव उनके स्वास्थ्य पर पड़ता है।

(v) श्रमिकों के प्रति अविश्वास :- वैज्ञानिक प्रबन्ध में प्रबन्धकों को श्रमिक पर विश्वास नहीं होता है वे उसी श्रमिक को अच्छा मानते हैं जो निश्चित समय में अपना निश्चित कार्य पूरा कर लेते हैं।

(vi) श्रम संघों द्वारा विरोध :- वैज्ञानिक प्रबंध का श्रम संघों द्वारा प्रतिकूल विरोध किया जाता है क्योंकि वैज्ञानिक प्रबन्ध द्वारा श्रमिकों को उनके योग्यता के अनुसार विभाजित कर दिया जाता है। जिससे श्रमिक संघ कमजोर पड़ जाता है क्योंकि श्रम संघ का मुख्य उद्देश्य श्रमिकों में एकता बनाये रखना है

(vii) कठोर नियंत्रण :- वैज्ञानिक प्रबन्ध में श्रमिकों पर कठोर नियंत्रण रखा जाता है उन्हें किसी प्रकार की कोई आवाज उठाने का कोई मौका नहीं दिया जाता है।

(viii) यह श्रमिकों के शोषण का नया तरीका है :- श्रमिकों का कहना है कि वैज्ञानिक प्रबन्ध श्रमिकों के शोषण का नया तरीका है। उनका कहना है कि यह मजदूरों का शोषण करता है न कि उसके स्वास्थ्य पर ध्यान देता है। यह श्रमिकों द्वारा अधिक काम लेता है और उद्योगपति अधिक काम कमाता है और अधिक परिश्रम का प्रभाव श्रमिकों के स्वास्थ्य पर पड़ता है।

Scanned with

(iv) प्रमाणीकरण तथा विशिष्टीकरण का प्रभाव :- उत्पादन क्रियाओं का प्रमाणीकरण तथा विशिष्टीकरण होने से श्रमिकों को केवल एक ही कार्य में दक्षता प्राप्त होती है। अन्य प्रकार के कार्यों में उसे किसी प्रकार की जानकारी नहीं होती है। जिससे श्रमिकों का दृष्टिकोण संकुचित हो जाता है।

II उद्योगपतियों द्वारा विरोध :- वैज्ञानिक प्रबंध का कुछ उद्योगपतियों के द्वारा भी विरोध किया जाता है। उद्योगपतियों द्वारा इसका विरोध निम्न कारणों से किया जाता है।

(i) अधिक व्यय :- किसी भी उद्योग में वैज्ञानिक प्रबंध लागू करने के लिए काफी अधिक पूंजी की आवश्यकता पड़ती है जो कि सभी उद्योगपतियों की वश की बात नहीं है। इसके बाद भी उनके अधिक व्यय का लाभ भी तुरंत नहीं प्राप्त होता है।

(ii) प्रबन्धकों की स्वतंत्रता समाप्त :- वैज्ञानिक प्रबन्ध लागू होने से प्रबन्धकों की स्वतंत्रता समाप्त हो जाती है। वे खुद अपने काम नहीं करके उन्हें विशेषज्ञों का हुक्म मानना पड़ता है।

(iii) मंदीकाल में मार स्वरूप :- वैज्ञानिक प्रबंध जिस उद्योग में लागू किया जाता है उस उद्योग को मंदीकाल में काफी हानि का सामना करना पड़ता है।

(iv) कारखाना एक प्रयोगशाला बन जाता है → इससे उत्पादन बढ़ाने के लिए कारखाना में तरह तरह के अनुसंधान किये जाते हैं जिससे कारखाना एक प्रयोगशाला बन जाता है।

(v) कार्य में ढिलाई :- जिन उद्योगों में वैज्ञानिक प्रबन्ध लागू किया जाता है। उनके कार्य में ढिलाई पाई जाती है।

Scanned with